आवेदन हेत दिशा–निर्देश

- उपरोक्त प्रवर्गों के लिये आवेदन निर्धारित रुपरेखा के अनुसार साफ-साफ व स्पष्ट टाइप होना चाहिए।
- काम की पुष्टि करने वाली प्रकाशित रिपोर्टें, लेख या प्रासंगिक दस्तावेज व खबरों की कतरनें, फोटो, विडियो फिल्म आदि आवेदन के साथ भेजी जानी चाहिए।
- आवेदन स्वयं, सम्बन्धित संस्था या किसी अन्य व्यक्ति/संस्था द्वारा भेजे/मनोनीत किये जा सकते है।

विगत वर्षों में सम्मानित व्यक्तियों एवं समुदायों पर प्रकाशित पुस्तकें

सेवा मन्दिर द्वारा प्रकाशित पुस्तकें गुदड़ी के लाल एवं सिल्वर फॉडर (अंग्रेजी में) उम्मेदमल लोढा पर्यावरण पुरस्कार विजेताओं के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का चित्रण करती है।

''गुदड़ी के लाल'' नंदिता रॉय द्वारा रचित ये व्यक्तित्व चित्रण राजस्थान के दूरदराज और बंजर इलाकों के ग्रामीणों के जीवन-संसार की जीवंत तस्वीर प्रस्तुत करते है। ये चित्र दर्शाते है कि, सच्चे नेतृत्व के गुण यहां सीमांत स्थिति में जी रहे लोगों तक में भी समान रुप से पाये जा सकते है।

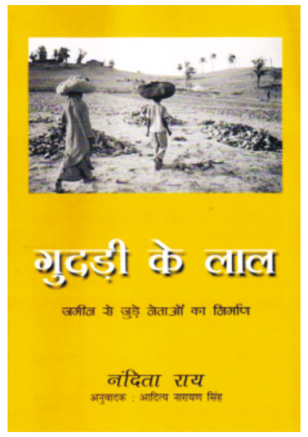

"गुदड़ी के लाल- 3" मांगु सिंह रावत द्वारा रचित पुस्तक राजस्थान के दूर दराज इलाकों में जमीन से जुड़े लोगों के संरक्षण और नेतृत्व की सुंदर चित्रण को दर्शाता है; की किस तरह निस्वार्थ भाव से उन्होंने प्रकृति को संरक्षित किया है।

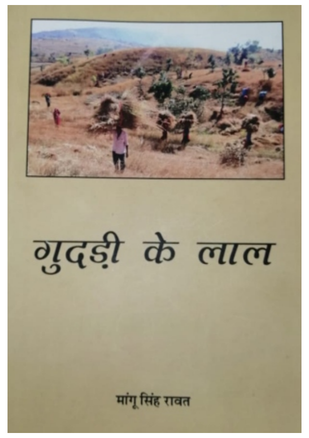

''सिल्वर फॉडर'', गुदड़ी के लाल, की अगली कड़ी के रुप में यह पुस्तक फिरोज अर्दालन द्वारा लिखी गई है। अपने प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण एवं संवर्द्धन हेतु अत्यन्त निर्धन एवं वंचित ग्रामीणों के संघर्ष एवं प्रतिबद्वता का इस पुस्तक में सुन्दर चित्रण किया गया है।

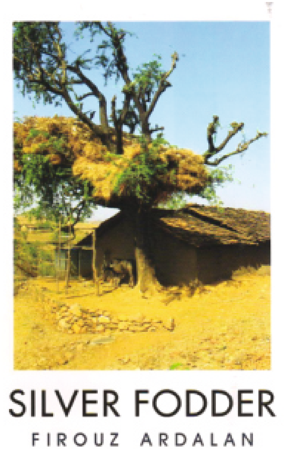

"विधि के दादाजी " रिद्धि शाह द्वारा रचित चित्रात्मक शैली में दक्षिण राजस्थान के जमीनी स्तर के नेताओं के आदर्शवाद एवं संघर्ष की दृश्यात्मक कहानी है; जो गुदड़ी के लाल पुस्तक की पंद्रह कहानियों में से एक उदयलाल किशनपुरा की कहानी है।

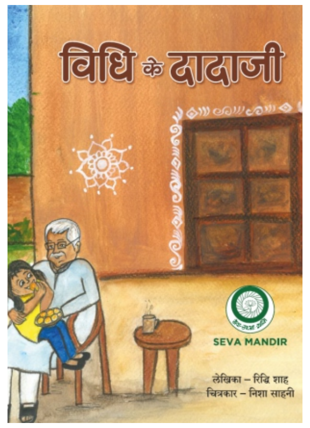

अगर आप इन पुस्तकों की प्रति प्राप्त करना चाहते है तो निम्न पते पर लिखें –

सेवा मंदिर

कुंजरु पुस्तकालयाध्यक्ष
सेवा मन्दिर, पुराना फतहपुरा, उदयपुर – 313004
टेली. नं. 91-294-2450960/ 2451041
ई मेल : info@sevamandir.org

7/11/2024

स्व. श्री उम्मेदमल लोढ़ा
(17.10.1924 – 12.02.1999)

सामुदायिक नेतृत्व हेतु
उम्मेदमल लोढ़ा पर्यावरण पुरस्कार 2026
उम्मेदमल लोढ़ा मेमोरियल ट्रस्ट

उम्मेदमल लोढ़ा मेमोरियल ट्रस्ट

उम्मेदमल लोढ़ा मेमोरियल ट्रस्ट का गठन जून 1999 में स्व. श्री उम्मेदमल लोढ़ा की स्मृति में किया गया। राजस्थान सरकार में 30 वर्षो से भी अधिक समय तक काम करने पश्चात्, 1982 में स्व. श्री लोढ़ा उद्यान विभाग में संयुक्त निदेशक के रूप मे सेवानिवृत हुए। उसके बाद, वे बिड़ला सीमेंट वर्क्स जोधपुर से जुड़े । वहाँ उन्होनें वृक्षारोपण द्वारा बंजर भूमि विकास का कार्य किया। 1985 में, सेवा मन्दिर के संस्थापक डॉ. मोहनसिंह मेहता के आग्रह पर वे सेवा मन्दिर आए। सेवा मन्दिर में उन्होंने, वानिकी विकास कार्यक्रम का स्वरूप विकसित करने एवं व्यवस्थित बनाने में उल्लेखनीय योगदान दिया।

उम्मेदमल लोढ़ा मेमोरियल ट्रस्ट की स्थापना एक ऐसे मनुष्य के सम्मान में की गई, जिसने अपने जीवन में अपने काम की मान्यता और प्रसिद्धी पाने की कोशिश नही की। ट्रस्ट की स्थापना अत्यंत साधारण लोगों और नागरिक संगठनों द्वारा पर्यावरण के संरक्षण के कार्यो द्वारा समानता और लोकतांत्रिक मूल्यों को मान्यता और सम्मान देने के उद्देश्य से भी की गई।

ट्रस्ट के उद्देश्य

- इस विषय में शोध समझ एवं प्रयासों को प्रोत्साहित करना कि, नागरिक किस प्रकार सामाजिक संरचनाओं को रूपान्तरित कर सकते है, और समाज को अधिक लोकतांत्रिक व समतावादी बना सकते है।
- त्रृणमूल स्तर पर किये गये कार्यों के निष्कर्षों को नीति–निर्माताओं, शिक्षाविदों तथा कार्यकर्ताओं तक पहुॅचाना।
- ऐसे व्यक्तिगत एवं सामूहिक नेतृत्व को प्रोत्साहित करना जो, सत्ता व शक्ति की प्रचलित धारणाओं से अलग हट, लोकतांत्रिक कार्यप्रणाली और ज्ञान पर आधारित सामाजिक मूल्यों की स्थापना करने के प्रयासो मे सफल हुआ हो।

सामुदायिक नेतृत्व हेतु उम्मेदमल लोढ़ा सम्मान

उम्मेदमल लोढ़ा ट्रस्ट अपने द्वारा स्थापित सम्मान के माध्यम से पर्यावरण, ग्रामीण क्षैत्रों में आजीविका की स्थिति में सुधार और ग्रामीण समुदायों के सशक्तीकरण को प्रोत्साहित करने वाली पहल को बढ़ावा दे रहा है। नकद पुरस्कार और सार्वजनिक सम्मान के द्वारा त्रृणमूल स्तर के अनुभवों को लोगों तक ले जाने और अनेकों ग्राम समुदायों को इन्हें अपनाने के लिये प्रेरित करने का प्रयास किया जा रहा है।

विगत वर्षो में, ट्रस्ट ने सेवा मन्दिर के सहयोग से सम्मान प्रदान किये है। 2005 से प्राकृतिक संसाधनों के विकास से जुड़े ''दक्षिणी राजस्थान'' के सभी संस्थाएँ एवं पात्र व्यक्ति सम्मान के लिये आवेदन कर सकते है।

चयन प्रक्रिया

पारदर्शी एवं विश्वसनीय चयन सुनिश्चित करने के लिये एक सख्त प्रक्रिया अपनाई जाती है। उम्मेदमल लोढ़ा मेमोरियल ट्रस्ट, एक तकनीकी दल व एक चयन समिति का गठन करता है। तकनीकी दल आवेदनों का बारीकी से प्राथमिक निरीक्षण कर प्रस्ताव चयन समिति को प्रेषित करता हैं।

उदयपुर, प्रतापगढ़, राजसमंद, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, सलूम्बर, जालोर, सिरोही, पाली, साँचोर जिले से उम्मेदमल लोढ़ा पुरस्कार के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित है।

सम्मान समारोह

चयनित व्यक्तियो एवं सदस्यों को प्रत्येक वर्ष 12 फरवरी को आयोजित एक समारोह में पुरस्कृत किया जाता है। जिसमें बड़ी संख्या में त्रृणमूल स्तर पर कार्यरत कार्यकर्ता एवं ग्रामीण जन भाग लेते है। इस अवसर पर पर्यावरण एवं विकास से जुड़े मुद्दों पर एक स्मृति व्याख्यान भी आयोजित किया जाता है।

प्रवर्गवार पात्रता एवं पुरस्कार

प्रवर्ग	पात्रता विवरण	राशि (रू.)
ग्राम स्तर की संस्था जो पर्यावरण संरक्षण सम्बन्धी कार्य कर रही है, को दिया जाने वाला सम्मान	सामूदायिक नेतृत्व की उल्लेखनीय क्षमताएं व ग्रामीण क्षैत्र/गांव के सामूहिक संसाधनों जैसे– सार्वजनिक चारागाह, बिलानाम, वन भूमि, तालाब, तलाई, सरोवर, सार्वजनिक कुए आदि प्राकृतिक संसाधनों के विकास व सुस्थिर (सस्टेनेबल) प्रबन्धन के प्रति संकल्पबद्वता दर्शाने वाली ग्राम स्तर की कोई सक्रिय संस्था/व्यक्तियों का समूह/ग्राम समिति /किसी एनजीओ की कोई समिति/ग्रामस्तरीय पंचायती राज संस्था।	सम्मान–पत्र व पच्चीस हजार रूपये का नकद पुरस्कार।
ग्राम वन सुरक्षा समिति या वन अधिकार **या सामुदायिक वन प्रबंधन समिति को दिया जाने वाला सम्मान**	कोई पंजीकृत वन–सुरक्षा समिति अथवा वन अधिकार समिति जिसने सामुदायिक संसाधन के रूप में वन–क्षेत्रों की सतत् सुरक्षा व विकास के लिये काम किया हो। विपरीत परिस्थितियों में काम करने वाली या वनभूमि सम्बन्धी विवादों के समाधान में नेतृत्व प्रदान करने वाली समितियों को प्राथमिकता दी जाएगी।	सम्मान–पत्र व पच्चीस हजार रूपये का नकद पुरस्कार।
ग्राम मुखियाओं को दिया जाने वाला सम्मान	प्राकृतिक संसाधनों के प्रबन्धन के लिये सक्रिय व सफलता पूर्वक काम करने तथा लोगों के सामूहिक सशक्तीकरण के कार्य में ग्राम स्तर पर समर्पण भाव व उल्लेखनीय साहस प्रदर्शित करने वाला कोई व्यक्ति/ स्वयं सेवक/ग्रासरूट्स स्तर की एनजीओ का कार्यकर्ता/सरकारी या अर्द्व सरकारी कार्यकर्ता/सरपंच / वार्डपंच / वनपाल / वनरक्षक / क्षैत्रीय कार्यकर्ता आदि।	सम्मान–पत्र व पाँच हजार रूपये का नकद पुरस्कार।